International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 4; July 2017; Page No. 57-61

प्रेमचंद एवं मार्टिन विक्रमसिंह की कहानियों में चित्रित दलित समाज का तुलनात्मक अध्यमयन

डॉ० आर० के० डी० निलंति कुमारी राजपक्ष

ज्येष्ठ व्याख्याता, भाषा, संस्कृति एवं रंग कला अध्ययन विभाग, श्री जयवर्धनपुर विश्वविद्यालय, गंगोडविल, नुगेगॉड, श्री लंका।

सरांश

प्रेमचन्द (सन्. 1880 से सन्. 1936 तक) और मार्टिन विक्रमसिंह (सन्. 1890 से सन्. 1976 तक है) अलग–अलग देशों के निवासी होने पर भी समकालीन होने के नाते उनकी कहानियों की विषयवस्तु पर तत्कालीन समस्याओं का प्रभाव पड़ा है।

प्रेमचन्द का कहानी साहित्य विभिन्न श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है। इनमें से एक श्रेणी दलित समाज से संबंधित कहानियाँ हैं। दलित जीवन से जुड़ी प्रेमचन्द की कहानियाँ कई तरह की हैं। कुछ कहानियों में दलितों की समस्याएँ सीधे–सीधे उठाई गई हैं। ऐसी कहानियों में दलित पात्र कहानी का मुख्य चरित्र है। उनकी रचनाओं में दलित पात्र व जीवन किसी न किसी रूप में शुरू से आखिर तक आया है। प्रेमचंद की दलित समाज से संबंधित कहानियों में 'मंदिर', 'सद्गति', 'ठाकुर का कुँआ', 'दूध का दाम', 'कफन', 'घासवाली', 'जुरमाना', 'राष्ट्र का सेवक', 'शूद्रा', 'सिर्फ एक आवाज़', 'मंत्र', 'कज़ाकी', 'गुल्ली डंड़ा' आदि प्रमुख हैं।

मार्टिन विक्रमसिंह की कहानियों में चित्रित दलित समाज

मार्टिन विक्रमसिंह की अनेक कहानियों में दलित समाज के कष्ठों का चित्रण हुआ है।

'विनोदास्वादय' इस प्रकार की कहानी है। इसमें अमीर परिवार के लोगों के विनोद के लिए गरीब बच्चे प्रयोग किए जाते हैं।

कुछ अमीर व्यक्ति गरीब परिवारों की लड़कियों को अपने जाल में फंसा कर उनके साथ सुखपूर्ण जीवन बिताने के बाद उन्हें छोड़ देते हैं। इस प्रकार की घटना 'कुवेणिहामि' कहानी में विद्यमान है। यह केवल कुवेणिहामि की ही कथा नहीं है, बल्कि नौकरानी बनकर दूसरों के घर जाने वाली बहुत सी गरीब लड़कियों की कहानी है।

'गॅहॅणियक' कहानी में नोनाहामि बहुत दुःख झेलती है। उसका पति उसे छोड़कर चला गया है। अनपढ़ होने के कारण नोनाहामि को किसी कार्यालय में नौकरी नहीं मिल सकती। अनपढ़ गाँव वाले सोचते हैं कि भगवान सब कुछ करते हैं। हमारे भाग्य के अनुसार ही सब कुछ होता है। कर्म के आधार पर ही सुख और दुःख मिलते हैं।

'सल्लि' कहानी में शहर में जीने वाले गरीब लोगों का जीवन दिखाया गया है। इस कहानी का नायक बहुत गरीब है। उसका घर बहुत छोटा है। उन लोगों का बच्चा बीमार है। बच्चा बिना दूध के भूखा रह जाता है। वह पीकर घर पहुँचता है। इस प्रकार आदमियों के शराब पीने के वजह से घर परिवार के लोग ही नहीं समाज में रहने वाले अन्य लोग भी परेशान होते हैं।

इस प्रकार मार्टिन विक्रमसिंह ने अपनी कहानियों में शहरी जीवन से संबंधित दलितों की अनेक समस्याएँ दर्शाई हैं।

माँ बाप न होने के कारण बच्चों को अनेक कष्ट झेलने पड़ते हैं। वे अनाथ बच्चे अपने जीवन–यापन के लिए दूसरों के घर नौकर बनकर जाते हैं। उन घरों में अनेक दुःख और पीड़ा झेलते हैं। मार–पीट और डॉट खाते हैं। पर उन बच्चों के लिए दूसरा रास्ता भी नहीं है। 'बुदुरॅस' कहानी में मल्लिसा भी इस प्रकार का अनाथ बच्चा है। उनके माँ–बाप न होने के कारण दिनेष वैद्य के घर में नौकर बनकर जाता है। उस घर में बहुत सारा काम भी करना पड़ता है और मार और डॉट भी हर दिन खानी पड़ती है।

'हिगॅन्ना' कहानी में मुख्य भिखारी भिक्षा मांगने के लिए एक अनाथ बच्चे का प्रयोग करता है। इस प्रकार के बच्चे ही आगे चलकर गुंडे, डाकू आदि बनेंगे क्योंकि इन बच्चों को बचपन से ही झूठा काम सिखा दिया गया है। यह समाज के लिए एक भयानक स्थिति है। इस प्रकार समाज चलेगा तो पूरा देश नाश होगा। इस यथार्थ पर मार्टिन विक्रमसिंह ने ध्यान दिया।

निष्कर्षतः प्रेमचंद एवं मार्टिन विक्रमसिंह की कहानियों में दलितों का मार्मिक चित्रण हुआ है। मार्टिन विक्रमसिंह की अपेक्षा प्रेमचंद की कहानियाँ सुधारवादी भावना से भरपूर है।

मूल शब्द: प्रेमचंद, मार्टिन विक्रमसिंह, कहानी, दलित समाज।

प्रस्तावना

प्रेमचन्द (सन्. 1880 से सन्. 1936 तक) और मार्टिन विक्रमसिंह (सन्. 1890 से सन्. 1976 तक है) अलग–अलग देशों के निवासी होने पर भी समकालीन होने के नाते उनकी कहानियों की विषयवस्तु पर तत्कालीन समस्याओं का प्रभाव पड़ा है।

प्रेमचन्द का कहानी साहित्य विभिन्न श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है। इनमें से एक श्रेणी दलित समाज से संबंधित कहानियाँ हैं। दलित जीवन से जुड़ी प्रेमचन्द की कहानियाँ कई तरह की हैं। कुछ कहानियों में दलितों की समस्याएँ सीधे–सीधे उठाई गई हैं। ऐसी कहानियों में दलित पात्र कहानी का मुख्य चरित्र है। उनकी रचनाओं में दलित पात्र व जीवन किसी न किसी रूप में शुरू से आखिर तक आया है। प्रेमचंद की दलित समाज से संबंधित कहानियों में 'मंदिर', 'सद्गति', 'ठाकुर का कुँआ', 'दूध का दाम', 'कफन', 'घासवाली', 'जुरमाना', 'राष्ट्र का सेवक', 'शूद्रा', 'सिर्फ एक आवाज़', 'मंत्र', 'कज़ाकी', 'गुल्ली डंड़ा' आदि प्रमुख हैं।

प्रेमचंद की कहानियों में चित्रित दलित समाज

प्रेमचन्द ने बीसवीं शताब्दी के दूसरे–तीसरे चौथे दशक में छूत–अछूत के संबंध में गहरी संवेदनशीलता से लिखा है। उन्होंने अपने समय और समाज के सच के सहारे भविष्य को भी देखने की कोशिश की है। प्रेमचन्द की कहानियों में से ज़्यादातर कहानियों का संबंध ग्रामीण परिवेश और वहाँ के शोषित पीड़ित जन से है। अछूत

कही जाने वाली जातियों के लोग ग्रामीण जनता के सबसे अधिक शोषित पीड़ित लोग हैं। इन लोगों की दयनीय दशा पर प्रेमचन्द ने ध्यान दिया। उनकी अधिकांश कहानियों में अछूत जातियों की समस्याओं को ग्रामीण जनता की आम समस्याओं का एक अंग बनाकर ही चित्रित किया गया है। इन कहानियों से उस समय का सामाजिक यथार्थ स्पष्ट रूप से जाना जा सकता है। इन सभी कहानियों में दलित या अछूत पात्रों की आर्थिक बदहाली दिखाई गई है।

पहले दलितों का मंदिर में प्रवेश निषेध था। मई 1927 में प्रेमचन्द की कहानी 'मंदिर' प्रकाशित हुई। यह कहानी अछूतों के मंदिर प्रवेश की समस्या पर लिखी गई है। विधवा सुखिया जाति की चमारिन है और ग़रीब औरत है। उसके पति की मृत्यु पहले ही हो चुकी है। उसके जीवन का एकमात्र सहारा उसका बेटा है। वह भी बीमार है। सुखिया अपने पुत्र को बचाने के लिए कोशिश करती है। वह भगवान से प्रार्थना करती है कि– "भगवान! मेरा बालक अच्छा हो जाये, तो मैं तुम्हारी पूजा करूँगी। अनाथ विधवा पर दया करो।"[1]

बच्चा थोड़ा सा अच्छो हो गया और फिर उसकी तबियत बिगड़ गई। वह अपने चाँदी के कड़े गिरवी रखकर पूजा की थाली सजाकर मंदिर पहुँची, लेकिन उसे मंदिर के भीतर जाने से रोक दिया गया। उसने फिर एक बार पुजारी से मंदिर में जाकर पूजा करने की इज़ाज़त माँगी। चालाक पुजारी ने उसे इज़ाज़त नहीं दी। रात में जब बच्चे की हालत और खराब हो गई तो वह मंदिर में अपने बच्चे के साथ चुपके से पहुँच गई। उसने मंदिर में प्रवेश तो कर लिया किंतु ठाकुरजी के चरण–स्पार्श करने से पहले ही पुजारी जग गए। पुजारी के शोर मचाने पर सब लोग इकट्ठा हो गए और सुखिया पर टूट पड़े। कुछ लोग उसे लात से तो कुछ लोग जूतों से पीटने लगे। इसी बीच में उसका पुत्र जियावन उसकी गोद से गिर गया और उसकी मृत्यु हो गई। बाद में पुत्र वियोग से सुखिया की भी मृत्यु हो जाती है। प्रेमचन्द ने सुखिया के चरित्र के द्वारा गाँव में रहने वाले ग़रीब, कमज़ोर, निस्सहाय एवं दलित जाति के लोगों की स्थिति को स्पष्ट किया है। सुखिया का एकमात्र दोष यह है कि वह गरीब है एवं जाति से दलित है। इसलिए उसे मंदिर में प्रवेश करने नहीं दिया गया। समाज की इस दुर्दशा का यहाँ सजीव चित्रण किया गया है। सुखिया का करुण क्रंदन लेखक के शब्दों में देखिए– "पापियों, मेरे बच्चे के प्राण लेकर अब दूर क्यों खड़े हो? मुझे भी क्यों नहीं उसी के साथ मार डालते? मेरे छू लेने से ठाकुरजी को छूत लग गई। पारस को छूकर लोहा सोना हो जाता है, पारस लोहा नहीं हो सकता। मेरे छूने से ठाकुरजी अपवित्र हो जाएंगे। मुझे बनाया, तो छूत नहीं लगी? लो अब कभी ठाकुरजी को छूने नहीं जाऊँगी। ताले में बंद रखो, पहरा बिठा दो।"[2] धर्म के ठेकेदार, पंडे और पुजारी सुखिया जैसी ग़रीब और दलित जाति के लोगों को भगवान के मंदिर में प्रवेश करने का अधिकार नहीं देते हैं। प्रेमचन्द ने तत्कालीन समाज में व्याप्त अंधविश्वास, ऊँच–नीच, भेद–भाव और आर्थिक रूप से कमज़ोर एवं सामाजिक रूप से दुर्बल लोगों की समस्याओं को उपस्थित किया है।

'ठाकुर का कुँआ' भी प्रेमचन्द की बहुचर्चित कहानी है। इसमें भी तत्युगीन सामाजिक स्थिति का वर्णन है। इस कहानी में जोखू बीमार था। गंगी अपने बीमार पति के लिए एक लोटा पानी ठाकुर के कुएं से लेना चाहती है। जोखू गंगी को वास्तविकता से परिचित कराते हुए कहता है कि– "हाथ– पाँव तुड़वा आएगी और कुछ न होगा। बैठ चुपके से। ब्राह्मण देवता आशीर्वाद देंगे, ठाकुर लाठी मारेंगे, साहूजी एक के पाँच लेंगे।"[3] गाँव में तीन कुएँ थे। इन में से एक अछूतों का था, एक ठाकुर का और एक साहू का। अछूतों वाले कुएँ में कोई जानवर गिरकर मर गया। गंगी का परिवार अछूत होने के कारण अछूतों के कुएँ के अलावा दूसरे कुएँ से पानी नहीं भर सकते। कहानीकार ने गंगी के माध्यम से समाज की तस्वीर अंकित की है। गंगी स्वभाव से भोली–भाली है किंतु शोषण दमन और भेदभाव की नीति ने उसे विद्रोही बना दिया है। वह कहती है– "हम क्यों नीच हैं और ये लोग क्यों ऊँचे हैं? इसलिए कि ये लोग गले में तागा डालते हैं। यहाँ तो जितने हैं एक से एक छँटे हैं। चोरी करें, जाल फरेब करें। झूठे मुकदमे ये करें। अभी इस ठाकुर ने तो उस दिन बेचारे गड़ेरिया की एक भेड़ चुरा ली थी और बाद में मार कर खा भी गया। इन्हीं पंडित के घर में तो बारहों मास जुआ होता है। यही साहू तो घी में तेल मिलाकर बेचते हैं। काम करा लेते हैं, मजूरी देने में नानी मरती है। किस–किस बात में हैं– हमसें ऊँचे? हॉ मुँह से हमसे ऊँचे हैं, हम गली–गली चिल्लाते नहीं कि हम ऊँचे हैं, हम ऊँचे। कभी गाँव में आ जाती हूँ तो रस भरी आँख से देखने लगते हैं, परंतु घमंड यह कि हम ऊँचे हैं।"[4]

इस प्रकार प्रेमचन्द ने तत्कांलीन समाज का चित्र जोखू और गंगी के संवाद के माध्यम से व्यक्त किया है। इस कहानी में प्रेमचन्द ने उच्च वर्ग की शोषण वृत्ति को यथावत रूप में चित्रित किया है। दूसरी ओर उन्होंने गंगी के माध्म्म से बताया है कि समाज के ऊँची जातिवालों की नज़र में दलित निम्न वर्ग मात्र सेवा करने के लिए ही उत्पन्न हुआ है।

प्रेमचन्द की यथार्थवादी कहानियों में 'दूध का दाम' कहानी का विशेष स्थान है। कहानी का नायक मंगल का पिता गूदड़ समाज का अछूत वर्ग का व्यक्ति है। उसकी मृत्यु प्लेग की बीमारी से हो जाती है। प्लेग जैसी घातक बीमारी का सामना करने की क्षमता गूदड़ में नहीं थी। ग़रीबी के कारण शरीर बहुत कमज़ोर था। ऐसी स्थिति में वह बीमारी का शिकार हो गया। बीमारी का इलाज करने के लिए उसके पास धन नहीं था। मुश्किल से वह अपना पेट भरता था। उसे कहीं से किसी की मदद नहीं मिली। इस अछूत आदमी की मदद कौन करेगा? असहाय गरीब एवं पीड़ित गूदड़ के लिए एक ही मार्ग था– मौत के मुँह में चला जाना। उसकी पत्नी? भुंगी की मृत्यु साँप काटने से होती है। इन दोनों की मृत्यु का कारण गरीबी ही है। बेचारा बच्चा मंगल अनाथ हो जाता है। दिन भर महेश बाबू के द्वार पर रहता है और उनके घर की जूठन खाकर पलता है। भुंगी के दूध से महेश बाबू का बेटा सुरेश पला है। फिर भी भुंगी के बच्चे की ओर महेश बाबू नहीं देखता है। खेल–खेल में सुरेश मंगल पर झूठा आरोप लगा देता है– "इसने मुझे छू दिया।"[5] मालकिन अपने बेटे को छूने के कारण मंगल को घर से भगा देती हैं। उसे जरा भी सुध नहीं थी कि मंगल की माँ यानि अछूत स्त्री के दूध से ही उसका बेटा पला है। मंगल महेश बाबू के घर के सामने एक नीम के पेड़ के नीचे टाट पर पड़ा रहता है। गाँव के धर्मात्मागओं को यह भी पसंद नहीं है। वे नहीं चाहते कि ज़मींदार के घर के सामने जहाँ सभी तरह के लोग पहुँचते हैं, वहाँ भंगी पड़ा रहे। अंत में मंगल को घर से भगा देते हैं। लेकिन अभी वह किशोर है उसको समझ में नहीं आता कि क्या करना है। वह अपने टूटे हुए मकान के सामने जाता है और खूब रोता है। भूख लगने पर फिर महेश बाबू के घर लौट आता है। मंगल का अंतिम वाक्य

[1] कालिया, रवीन्द्र.(सं.), प्रेमचंद– दलित जीवन की कहानियाँ (मंदिर), भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली. (2012), पृ.45।

[2] कालिया, रवीन्द्र.(सं.), प्रेमचंद– दलित जीवन की कहानियाँ (मंदिर), भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली. (2012), पृ. 50–51।

[3] प्रेमचंद, प्रेमचंद की संपूर्ण कहानियाँ, खंड–1, (ठाकुर का कुँआ), सुमित्र प्रकाशन, इलाहाबाद. (2008), पृ.84।

[4] वही. पृ.85।

[5] वही. पृ.345।

कितना दर्द भरा है– "लोग कहते हैं दूध का दाम कोई नहीं चुका सकता और मुझे दूध का यह दाम मिल रहा है।"[6]

'घासवाली' कहानी में आने वाली नायिका मुलिया भी निम्न वर्ग की स्त्री है। वह भी अपनी ग़रीबी के कारण घास काटकर जिंदगी बिताती है। इस गाँव में युवा ठाकुर चैनसिंह मुलिया के पीछे पड़ जाते हैं। मुलिया ने क्रोध से उसको मना कर दिया। चैनसिंह पर इसका प्रभाव पड़ा। एक साधारण चमार युवती के इस साहस और आत्म गौरव के प्रदर्शन से चैनसिंह का जीवन ही बदल गया। चैनसिंह उस दिन से दूसरा ही आदमी हो गया। कहानी में दिखाया गया है कि गरीबों और पिछड़े हुए तबकों के लोगों के प्रति उसका दृष्टिकोण और व्यवहार गुणात्मक रूप से बदल गया। वह अब उनसे बराबरी के स्तर पर बात करने लगा। मुलिया चैनसिंह से कहती है कि– "अगर मेरा आदमी तुम्हारी औरत से इसी तरह बातें करता, तो तुम्हें कैसा लगता? तुम उसकी गर्दन काटने पर तैयार हो जाते कि नहीं? बोलो! क्या समझते हो कि महावीर चमार है तो उसकी देह में लहू नहीं है, उसे लज्जा नहीं है, अपनी मर्यादा का विचार नहीं है? मेरा रूप–रंग तुम्हें भाता है। क्या घाट के किनारे मुझसे कहीं सुंदर औरतें नहीं घूमा करतीं? मैं उनके तलवों की बराबरी भी नहीं कर सकती। तुम उसमें से किसी से क्यों नहीं दया माँगते! क्या उनके पास दया नहीं है? मगर वहाँ तुम न जाओगे क्योंकि वहाँ जाते तुम्हारी छाती दहलती है। मुझसे दया माँगते हो, इसलिए न कि मैं चमारिन हूँ, नीच जाति की हूँ और नीच जाति की औरत ज़रा–सी घुड़की–धमकी व ज़रा–से लालच से तुम्हारी मुट्ठी में आ जायेगी। कितना सस्ता सौदा है। ठाकुर हो न, ऐसा सस्ता सौदा क्यों छोड़ने लगे?"[7]

'सद्गति' भी दलित समस्या पर निर्मित कहानी है। इसमें निम्न लोगों की दयनीय दशा के साथ–साथ, पंडितों के व्यवहार के प्रति व्यंग्यामत्मक प्रहार भी किया गया है। दुखी चमार अपनी बिटिया की सगाई का साइत–सगुन विचारने के लिए पंडित घासीराम के यहाँ पहुँचा। दुखी तन, मन से पंडित जी की सेवा करता था। वह चाहता था कि किसी प्रकार उसकी बेटी का कन्यादान हो जाए। दुखी एक लाचार, बेसहारा, विवश और गरीब मज़दूर है। पंड़ित घासीराम ने दुखी को इतना काम दिया कि वह काम करते–करते मर गया। दुखी के मरने के बाद भी पंडित के मन में यह विचार आया कि यह चमार हमारे आँगन में मर गया यह अशुभ है। दुखी की दयनीय दशा पर उसे कोई दुख नहीं है। चमारों का रोना भी उन लोगों को कष्ट पहुँचाता है। "पंडिताइन– चमार का रोना मनहूस है। पंडित– हाँ बहुत मनहूस है। पंडिताइन– अभी से दुर्गंध उठने लगी। पंडित– चमरा था ससुरा कि नहीं"[8]

पंडित जी को तनिक भी यह ख्याल नहीं आता कि उन्हीं का काम करते–करते दुखी मर गया। घासीराम इंसान को इंसान नहीं समझता है। कहानीकार प्रेमचन्द ने घासीराम के माध्यम से दर्शाया है कि दलित जीवन को शोषित करने में धर्म की भी बहुत बड़ी भूमिका है।

'मंत्र' कहानी में पंडित लीलाधर चौबे एक अद्भुत चरित्र है। वह राष्ट्र सेवक है। एक बार पंडित जी की जान अछूत वर्ग के लोगों के द्वारा ही बचाई जाती है। जब अछूत वर्ग कष्ट में पड़ जाता है तो पंडितजी अपनी जान पर खेलकर उन अछूत आदमियों का जीवन बचा लेते हैं। अंत में सपरिवार अछूतों के गाँव में बस जाते हैं। यह एक आदर्शवादी कहानी है। प्रेमचन्द ने इस प्रकार के समाज की कल्पना की जिसमें कोई भेद–भाव न हो।

'गुल्ली डंडा' भी दलित विमर्श से संबंधित कहानी है। इस कहानी में भी उच्च जाति के एक बड़े इंजीनियर और उसके बालसखा गया चमार की तुलना की गई है। गया बचपन में बहुत विद्रोही लड़का था पर बड़े होने के बाद उसका स्वभाव बदल जाता है। कहानीकार प्रेमचन्द ने गया के माध्यम से समाज व्यवस्था पर चोट की है। उन्होंने इस पात्र के माध्यम से निम्नवर्गीय जीवन की ओर संकेत किया है। उनका विचार है कि निम्नवर्ग में भी अन्याय का विरोध करने की क्षमता होती है। उनके मन में भी शोषण एवं अन्याय के विरोध में आक्रोश जन्म लेता है। निम्न वर्ग अपने इस आक्रोश को कभी–कभी प्रकट भी कर देता है, किंतु परिस्थितियों से लाचार एवं विवश होकर कभी–कभी वह अपना मुँह नहीं खोलता है। इस पात्र के माध्यम से उन्होंने यह भी स्पष्ट किया है कि शोषित वर्ग की प्रतिभाएं विकसित नहीं हो पाती हैं, क्योंकि उन्हें विकास का पर्याप्त अवसर प्राप्त नहीं होता है।

'जुरमाना' कहानी के प्रमुख अछूत पात्र हुसैनी और अल्लारक्खी मुस्लिम मेहतर हैं। दोनों म्युनिसिपैलिटी के सफाई कर्मचारी हैं। अल्लालरक्खी सफाई के दरोगा खैरात अली के अत्याचारों से दुखी होकर उसे गाली दे बैठती है। दरोगा गाली सुन लेता है। अल्लाखरक्खी घबरा जाती है और सोचती है कि उसे इस बार जुरमाना ही नहीं देना पड़ेगा बल्कि नौकरी से ही निकाल देंगे। पर दारोगा ने इस बार उस पर कोई जुरमाना नहीं किया।

'राष्ट्र का सेवक' एक छोटी सी कहानी है। राष्ट्र का सेवक बताता है कि देश की मुक्ति का एक ही उपाय है नीचों के साथ भाई–चारे का व्यवहार। राष्ट्र सेवक ने नीची जात के नौजवान को गले लगाया और मंदिर ले जाकर दर्शन करवाया। राष्ट्र सेवक की बेटी पिता के पास जाकर बोली– "श्रद्धेय पिताजी, मैं मोहन से ब्याह करना चाहती हूँ। राष्ट्र सेवक ने प्यार की नज़रों से देखकर पूछा– मोहन कौन है? इंदिरा ने उत्साह भरे स्वर में कहा– मोहन वही नौजवान है, जिसे आपने गले लगाया, जिसे आप मंदिर में ले गए, जो सच्चा बहादुर और नेक है। राष्ट्र सेवक ने प्रलय की आँखों से उसकी ओर देखा और मुँह फेर लिया।"[9]

यही सच है राष्ट्र सेवक सब लोगों को चिल्ला–चिल्ला कर कहता है कि ऊँच–नीच का भेदभाव छोड़ना चाहिए। हम सब ईश्वर के बच्चे हैं। सभी के साथ भाईचारे से रहना चाहिए। पर ये उसके शब्द मात्र शब्द हैं।

इस प्रकार प्रेमचन्द ने दलितों से संबंधित कहानियों में दलितों की दयनीयता का मार्मिक चित्रण करके उनके उद्धार की भावना जागृत की है।

मार्टिन विक्रमसिंह की कहानियों में चित्रित दलित समाज

मार्टिन विक्रमसिंह की अनेक कहानियों में दलित समाज के कष्ठों का चित्रण हुआ है।

'विनोदास्वादय' इस प्रकार की कहानी है। इसमें अमीर परिवार के लोगों के विनोद के लिए गरीब बच्चे प्रयोग किए जाते हैं। अमीर लोग हाबर में एक नाव आने तक इंतजार करते हैं। वे लोग सिक्के पानी में फेंकते हैं। गरीब बच्चे ये सिक्के ढूँढ़ने के लिए पानी में तैरते हैं। गरीब बच्चा सोमदास को तैरना नहीं आता। पर पैसे पाने

[6] प्रेमचंद, प्रेमचंद की संपूर्ण कहानियाँ, खंड–1, (दूध का दाम), सुमित्र प्रकाशन, इलाहाबाद. (2008), पृ.349।

[7] प्रेमचंद, प्रेमचंद की संपूर्ण कहानियाँ, खंड–1, (घासवाली), सुमित्र प्रकाशन, इलाहाबाद. (2008), पृ.192।

[8] प्रेमचंद, प्रेमचंद की संपूर्ण कहानियाँ, खंड–1, (सद्गति), सुमित्र प्रकाशन, इलाहाबाद. (2008), पृ.668।

[9] कालिया, रवीन्द्र.(सं.), प्रेमचंद– दलित जीवन की कहानियाँ (राष्ट्र सेवक), भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली. (2012), पृ.154।

की अभिलाषा में पानी में कूदता है और मर जाता है। इस तरह अमीर लोगों के विनोद के कारण एक गरीब बच्चे के प्राण निकल गए। पर उन लोगों ने इस पर ध्यान नहीं दिया। इस प्रकार समाज में रहने वाले अमीर लोग किस प्रकार गरीब लोगों के साथ व्यवहार करते हैं और उनके बारे में किस प्रकार सोचते हैं 'विनोदास्वादय' कहानी के माध्यम से दर्शाया है।

इतना ही नहीं रईस लोग किस तरह गरीबों से व्यवहार करते हैं इस कहानी में स्पशष्ट रूप से दर्शाया गया है। हाबर में नाव आने तक लोग इंतजार कर रहे हैं। यहाँ पर आए हुए अधिकांश लोग अमीर हैं। इसी बीच वहाँ हाबर में नाव चलाने वाले गरीब मल्लाह का बेटा सोमदास आता है। तब सब लोग उसे भगा देते हैं।

"तू जा यहाँ से बच्चों को डरा रहे हैं।"
"साहब मुझे पाँच पैसा दीजिए।"
"जा... जा... तू हट यहाँ से।"[10]

कुछ अमीर व्यक्ति गरीब परिवारों की लड़कियों को अपने जाल में फंसा कर उनके साथ सुखपूर्ण जीवन बिताने के बाद उन्हें छोड़ देते हैं। इस प्रकार की घटना 'कुवेणिहामि' कहानी में विद्यमान है। कुवेणिहामि बहुत ग़रीब लड़की है। वह एक नौकरानी बनकर शहर के एक रईस परिवार के घर में आती है। इस परिवार की जान–पहचान का एक रईस लड़का षॅलटन् सूरियकान्त सुन्दहर कुवेणिहामि को प्रेम जाल में फँसा लेता है। बाद में उसे गर्भवती बनाकर और दो सौ रुपए देकर वह आज़ाद हो जाता है। इसके बाद कुवेणिहामि का जीवन नरक बन जाता है। अपने बच्चे के साथ वह बहुत दुःख सहती है। कुवेणिहामि का पति कुंजीरामन अपने सौतेले बेटे को पीटता है इस कारण कुवेणिहामि अपने पति कुंजीरामन को मारती है। कुंजीरामन को मारने की सजा के रूप में उसे मृत्यु दण्ड मिलता है। कुवेणिहामि को मृत्युम दंड सुनाने वाला जज उसे प्रेमजाल में फँसाकर धोखा देने वाला अमीर लड़का षॅलटन सूरियकांत ही था। यह कहानी एक प्रकार से समाज के रईस लोगों के दोहरे चरित्र को दिखाती है। वे लोग ही समाज की नीति बनाते भी हैं और बिगाड़ते भी हैं। सूरियकांत का पारिवारिक जीवन बहुत सुखद है। उसने एक रईस लड़की से शादी की और उसके बाल बच्चे सुखी हैं। पर सूरियकांत का ही एक बच्चा यानि कुवेणिहामि का बेटा अपने माँ–बाप के बिना अनाथ हो गया। यह कुवेणिहामि की ही कथा नहीं है। नौकरानी बनकर दूसरों के घर जाने वाली बहुत सी गरीब लड़कियों की कहानी है।

'गॅहॅणियक' कहानी में नोनाहामि बहुत दुःख झेलती है। उसका पति उसे छोड़कर चला गया है। अनपढ़ होने के कारण नोनाहामि को किसी कार्यालय में नौकरी नहीं मिल सकती। अनपढ़ गाँव वाले सोचते हैं कि भगवान सब कुछ करते हैं। हमारे भाग्य के अनुसार ही सब कुछ होता है। कर्म के आधार पर ही सुख और दुःख मिलते हैं।

'सल्लि' कहानी में शहर में जीने वाले गरीब लोगों का जीवन दिखाया गया है। इस कहानी का नायक बहुत गरीब है। उसका घर बहुत छोटा है। घर में कोई सामान वगैरह नहीं है। वह एक कारखाने में काम करता है। कारखाने से घर आता है तब नशे में आता है। तब पत्नी को गुस्सा आता है। घर में खाने के लिए कुछ नहीं है। पति पत्नी के बीच का संवाद इस प्रकार है।

"खाना क्यों नहीं बनाया?"
"चावल कहाँ से मिलते?"
"क्यों कल का बचा हुआ चावल?"
"केवल चावल ही खाता है। दूसरी चीजें कहाँ से मिलती? पीके आता है, खाना खाने।"[11]

उन लोगों का बच्चा बीमार है। बच्चा बिना दूध के भूखा रह जाता है। वह पीकर घर पहुँचता है। इस प्रकार आदमियों के शराब पीने के वजह से घर परिवार के लोग ही नहीं समाज में रहने वाले अन्य लोग भी परेशान होते हैं।

इस प्रकार मार्टिन विक्रमसिंह ने अपनी कहानियों में शहरी जीवन से संबंधित दलितों की अनेक समस्याएँ दर्शाई हैं।

माँ बाप न होने के कारण बच्चों को अनेक कष्ट झेलने पड़ते हैं। वे अनाथ बच्चे अपने जीवन–यापन के लिए दूसरों के घर नौकर बनकर जाते हैं। उन घरों में अनेक दुःख और पीड़ा झेलते हैं। मार–पीट और डाँट खाते हैं। पर उन बच्चों के लिए दूसरा रास्ता भी नहीं है। 'बुदुरॅस' कहानी में मल्लिसा भी इस प्रकार का अनाथ बच्चा है। उनके माँ–बाप न होने के कारण दिनेष वैद्य के घर में नौकर बनकर जाता है। उस घर में बहुत सारा काम भी करना पड़ता है और मार और डाँट भी हर दिन खानी पड़ती है। एक दिन दिनेष वैद्य के बेटे के हाथ के सोने का आभूषण खो जाता है। उन लोगों ने मल्लिसा पर शक करके उसको बहुत मारा पीटा और आँखों में मिर्च भी लगा दी। पर सच यह है कि मल्लिसा ने सोने का आभूषण नहीं लिया। पर उसके साथ बहुत मार–पीट होने के कारण वह डर गया और चोरी करना स्वीकार कर लिया।

'हिगॅन्ना' कहानी में मुख्य भिखारी भिक्षा मांगने के लिए एक अनाथ बच्चे का प्रयोग करता है। इस प्रकार के बच्चे ही आगे चलकर गुंडे, डाकू आदि बनेंगे क्योंकि इन बच्चों को बचपन से ही झूठा काम सिखा दिया गया है। यह समाज के लिए एक भयानक स्थिति है। इस प्रकार समाज चलेगा तो पूरा देश नाश होगा। इस यथार्थ पर मार्टिन विक्रमसिंह ने ध्यान दिया।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः प्रेमचंद एवं मार्टिन विक्रमसिंह की कहानियों में दलितों का मार्मिक चित्रण हुआ है। मार्टिन विक्रमसिंह की अपेक्षा प्रेमचंद की कहानियाँ सुधारवादी भावना से भरपूर है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. कालिया, रवीन्द्र.(सं.), (2012), प्रेमचंद– स्त्री जीवन संबंधी कहानियाँ, नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन।
2. प्रेमचंद, (2008), प्रेमचंद की संपूर्ण कहानियाँ, खंड–1, इलाहाबाद, सुमित्र प्रकाशन।
3. प्रेमचंद, (2008), प्रेमचंद की संपूर्ण कहानियाँ, खंड–2, इलाहाबाद, सुमित्र प्रकाशन।
4. प्रेमचंद, (2011), मानसरोवर– भाग एक से आठ तक, नयी दिल्ली, स्टार पब्लिकेशनस।
5. विक्रमसिंह, मार्टिन. (2012), कता अहुर, राजगिरिय, सी.स. सरस समागम।
6. विक्रमसिंह, मार्टिन. (2011), गॅहॅनियक सह तवत् कता, राजगिरिय, सी.स. सरस समागम।
7. विक्रमसिंह, मार्टिन. (2012), तोरागत केटि कता1, राजगिरिय, सी.स. सरस समागम।
8. विक्रमसिंह, मार्टिन. (2007), पवुकारयाट गल् गॅसीम, राजगिरिय, सी.स. सरस समागम।
9. विक्रमसिंह, मार्टिन. (1992), मगुल गेदर, राजगिरिय, सी.स. सरस समागम।

[10] विक्रमसिंह, मार्टिन.वहल्लु, (विनोदास्वादय), सी.स. सरस समागम. राजगिरिय, (2012), पृ. 83।

[11] विक्रमसिंह, मार्टिन.मगे कताव, (सल्लि), सी.स. सरस समागम. राजगिरिय, (2012), पृ. 72।

10. विक्रमसिंह, मार्टिन. (2011), हदँ साक्कि कीम, राजगिरिय, सी. स. सरस समागम।
11. विक्रमसिंह, मार्टिन. (2011), वहल्लु, (विनोदास्वादय), राजगिरिय, सी.स. सरस समागम।
12. विक्रमसिंह, मार्टिन. (2011), मगे कताव, (सल्लि), राजगिरिय, सी.स. सरस समागम।